फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 276 1/- जून 2011

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (18)

✱ अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ? ✱ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

37 वर्षीय मजदूर : सुबह 5 बजे उठता हूँ। रेल लाइनों के पार शौच करने जाना पड़ता है। बहुत ध्यान रखना पड़ता है। गाड़ियों से दो को कटते देखा है – एक तो मेरा रिश्तेदार था।

हाथ-मुँह धो कर साथी के संग भोजन बनाता हूँ। सुबह सब्जी-रोटी बनाते हैं। प्रायवेट बोर से सप्लाई का पानी भरते हैं, इसके लिये 150 रुपये महीना देते हैं। भोजन 7½ तक बना लेते हैं। नहाना, खाना और सवा आठ बजे फैक्ट्री के लिये चल देना.....

कुछ बातें बार-बार दिमाग में आती हैं। इन्दिरा गाँधी मरी तब स्कूल में छुट्टी हुई। तब मैं 8-9 वर्ष का था। घर लौटते समय स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के तीन डिब्बों में आग लगी देखी। गाड़ी से सिखों को निकाल-निकाल कर पुलिसवाले मार रहे थे। भीड़ दूर खड़ी थी। ट्रेन से निकाल कर पुलिसवाले एक सिख को लाये और बोरी में बन्द कर दिया। बगल की झुग्गी वाले से पुलिसवालों ने मिट्टी का तेल माँगा तो मैं देखने खड़ा हुआ कि क्या करते हैं। बोरी पर तेल छिड़क कर पुलिसवालों ने आग लगा दी। मैं डर कर भाग लिया। तीन दिन कर्फ्यु। अब सोचता हूँ तो बहुत अजीब लगता है – ऐसा कैसे हो जाता है ?

सुबह 8½ बजे ड्युटी आरम्भ होती है। इस समय न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित सिसौदिया इंजिनियरिंग फैक्ट्री में काम कर रहा हूँ। यहाँ होण्डा विभाग में ड्रिल कर रहा हूँ जबकि रेफ्रिजिरेशन एण्ड एयरकंडिशनिंग में आई.टी.आई. किये हूँ। इस समय अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन यहाँ 4503 रुपये है पर इस फैक्ट्री में मैं 3500 रुपये तनखा में लगा हूँ....

सन् 2000 में आई.टी.आई. में पढाई पूरी की। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाँव से 20 किलोमीटर दूर प्रतापगढ स्थित आई.टी.आई. प्रतिदिन साइकिल से आता-जाता था। वर्ष में 700 रुपये छात्रवृति मिलती थी। खेती का काम भी करता था। पिताजी फरीदाबाद में गेडोर-झालानी टूल्स फैक्ट्री में स्थाई मजदूर थे पर कई वर्ष से उन्हें नाममात्र की तनखा भी मुश्किल से मिल रही थी।

अप्रेन्टिस के लिये दिल्ली पहुँचा। विधवा सास का त्रिलोकपुरी में मकान था पर छोटे तीन साले और दो सालियों का खर्चा था.... अप्रेन्टिस करने की बजाय नोएडा में ठेकेदार गजराज सेक्युरिटी के जरिये ग्रेटर कैलाश में नान्ज सुपरमार्केट में 3800 रुपये तनखा में लगा। 3½ महीने काम किया, बन्द हो गई... मैनेजर ने 3-4 करोड़ रुपये का घोटाला किया था। दस दिन ढूँढने के बाद नोएडा सैक्टर-11 में कपिल एक्सपोर्ट में 1200 रुपये तनखा में लगा। कपड़े की छपाई और मशीन से कढाई का काम सीखा। ज्यादा समय काम कर पीस रेट पर महीने में 4-6 हजार रुपये हो जाते थे। दो वर्ष काम किया। पिताजी बीमार, गाँव गया।

फैक्ट्री में पहुँच कर बाहर पड़े माल को उठा कर मशीन पर लाता हूँ। 8 घण्टे में 1800 पीस में ड्रिल करना। एक्सीडेन्ट का विशेष डर नहीं है। दिमाग में बहुत सारी बातें चलती रहती हैं.....

आठवीं फरीदाबाद में कर के गाँव गया। बाबा (दादा) बूढे हो गये थे। मैं बैलों से हल चलाना और खेती के अन्य काम करने लगा। तीन मील दूर स्कूल से दसवीं की। इन्टर कॉलेज में प्रवेश लिया और प्रतापगढ में विमुक्त जाति छात्रावास में रहने लगा। 50 रुपये महीना छात्रवृति। शनिवार को गाँव आ जाता और सोमवार को वापस जाता – खेती के काम करता, ज्यादा काम होने पर छुट्टी कर लेता। माँ को आँख ठीक करवाने फरीदाबाद ले गया तब 11वीं में फेल हुआ। मानसिक तनाव के कारण 12वीं में भी एक बार फेल हुआ – गर्भ में शिशु की मृत्यु से पत्नी की मृत्यु हो गई। इतने दिन साथ रहे थे, 9वीं में था तब शादी हुई थी.....

12वीं प्रायवेट से की। बगल के गाँव के एक स्कूल में पढा रहे दसवीं फेल पड़ोसी ने गाँव में स्कूल खोला तब मैं उससे जुड़ा। बच्चे 250 हो गये तब 500-500 रुपये में हम 4 अध्यापक हो गये थे। आई टी आई करने के संग-संग खेती के कारण पढाना छोड़ा।

12½ बजे भोजन अवकाश। फैक्ट्री में 400 मजदूर हैं पर कैन्टीन नहीं है। भोजन के लिये स्थान नहीं है। अपनी झुग्गी जा कर खाना खाता हूँ। और, 1 बजे से फिर ड्रिल पर......

1993 में दसवीं करने के बाद नौकरी के लिये हाथ-पैर मारने लगा था। कई फार्म भरे। रेलवे में गैंगमैन बनने के लिये भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर गया। फिर आई टी आई आधार पर असिस्टेन्ट ड्राइवर के लिये मुम्बई, इलाहाबाद, लखनऊ, कोलकाता के चक्कर काटे। उत्तर प्रदेश नहर विभाग में 1998 में (बाकी पेज चार पर)

फरीदाबाद में मजदूर

सुडट्रैक मजदूर : "13/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 40 स्थाई मजदूर, 20 कैजुअल वरकर और 6 ठेकेदारों के जरिये रखे 105 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **एस्कोर्ट्स** और **महिन्द्रा** ट्रैक्टरों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और हैल्परों की तनखा 4000 रुपये।"

प्राँजल प्रोजेक्ट श्रमिक : "प्लॉट 147 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3700 और कारीगरों की 4000 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 मजदूरों में 6-7 की ही है।"

श्रीजी तथा अग्रवाल पैकेजिंग कामगार : "39 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500-3000 और सी एन सी ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये है जबकि दिखाते 4503 रुपये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एन बी जी प्रिन्टोग्राफिक वरकर : "गली नं. 1 रघुवीर कॉलोनी, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में 80 मजदूर सुबह 9 से रात 8, रात 11½ बजे तक प्रिन्टिंग प्रेस बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3600 रुपये और फिटर की 4500-8500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 मजदूरों के हैं.... पी.एफ. के एक हिस्से की बजाय दोनों हिस्से मजदूरों की तनखा से काटते हैं। हर महीने तनखा से 900-1600 रुपये पी.एफ. के नाम पर काटते हैं।"

पीएमप्रो एक्सपोर्ट कामगार : "बदरपुर बॉर्डर, मथुरा रोड़ पर स्थित बड़ी फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और महिला मजदूरों को भी जबरन रात 1½, अगली सुबह 5 बजे तक रोक लेते हैं। रात 1½ अथवा सुबह 5 पर छूट कर फिर सुबह 9 से काम पर लगना। धमकी देते हैं कि रात को नहीं रुकोगी तो नौकरी से निकाल देंगे। काम का बहुत दबाव, पैर सूज जाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रात 1½ बजे छोड़ते हैं तब गेट पास देते हैं पर पता ही नहीं लगता कि उस पर लिखा क्या है। कैजुअल वरकरों की भर्ती तृप्ता इन्टरप्राइजेज (दिल्ली) के नाम से करते हैं।"

लखानी वरकर : "प्लॉट 136 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों ने 17 मई को काम बन्द किया तब 18 मई को अप्रैल की तनखा दी।

"लखानी इण्डिया की प्लॉट 265 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अप्रैल की तनखा नहीं दिये जाने पर 17 मई को भोजन अवकाश के बाद मजदूरों ने काम बन्द किया..... जुलाई 10 में नौकरी छोड़ी पर जून 11 के आरम्भ तक किये काम के पूरे पैसे नहीं दिये हैं — तारीख देते रहते हैं, हर तारीख पर 50-60 लोग पहुँचते हैं, 8-10 को कुछ दे कर कहते हैं कि पैसे खत्म हो गये, फलाँ तारीख को आना। तनखा से काटी पी.एफ. राशि भी कम्पनी जमा नहीं कर रही, जिन्हें काम छोड़े 1-1½ वर्ष हो गया उन मजदूरों को फण्ड के पैसे नहीं मिले हैं।"

व्हर्लपूल मजदूर : " 28-29 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 30 कैन्टीन वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 4503 रुपये देते हैं। रविवार के 12 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और उनके 100 रुपये देते हैं।"

क्लच ऑटो श्रमिक : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने स्थाई मजदूरों की अप्रैल की तनखा में 1800 रुपये कम कर दिये...... विरोध में स्थाई मजदूरों ने कल, 12 मई को अप्रैल की तनखा नहीं ली। कम्पनी कह रही है कि 2006 के मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौते अनुसार उत्पादन नहीं देने पर पैसे काटे हैं। यह चाल है...... रेवाड़ी में नई फैक्ट्री की चर्चा है और कम्पनी चाहती है कि यहाँ के 350 स्थाई मजदूर अपने आप नौकरी छोड़ दें।"■

आई एम टी (पेज तीन का शेष)

का आरोप लगा कर मैनेजमेन्ट ने एक स्थाई मजदूर को निलम्बित कर दिया। छुट्टी से लौटने पर ठेकेदारों के जरिये रखे 4 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया — यूनियन का झण्डा लगवाने में शामिल थे का आरोप। कम्पनी 2 वर्ष के लिये 60-70 ट्रेनी रखती है और परीक्षा पश्चात स्थाई कर देती है — इधर 18 ट्रेनी की परीक्षा के पश्चात 4 को निकाल दिया। इस सब के विरोध में इन्टक यूनियन ने 5 मई को हड़ताल का नोटिस दिया। कम्पनी ने स्टे ले लिया। शुक्रवार, 20 मई से सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। कल, 23 मई को श्रम विभाग में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच वार्ता से समाधान नहीं निकला।"

रूप पोलीमर्स वरकर : "प्लॉट 28 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 35 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एनेक्सको टैक्नोलॉजी मजदूर : "157 नौरंगपुर गाँव स्थित फैक्ट्री में अप्रैल की तनखा 11 मई तक नहीं दी तो 12 मई को मजदूर भोजन अवकाश में जनरल मैनेजर के पास गये। एक अधिकारी बोला कि चेक पर हस्ताक्षर नहीं हुये हैं, 16 मई से पहले पैसे नहीं मिलेंगे। जनरल मैनेजर बोला कि मैं कुछ नहीं कर सकता, चाहो तो मेरा सिर फोड़ लो। ठीक है, 16 मई को पैसे मिलेंगे तब काम शुरू होगा कह कर मजदूर फैक्ट्री के पार्क में जा कर बैठ गये। काम बन्द किये 2½ घण्टे हो गये तब एक अधिकारी आया और बोला कि रात की शिफ्ट को तनखा आज दे देंगे और आपको कल, काम शुरू करो। रात की ड्युटी वालों को पैसे नहीं दिये..... पर दिन वालों को 13 मई को तनखा दे दी। रात वालों ने 8 बजे तक तनखा नहीं मिलने पर काम बन्द करने की बात की..... ऐन समय पर पैसे दे दिये।"

टुकड़ों में आज

लव आनंद, अज़रा तबस्सुम, शमशेर अली, नीलोफर, लख्मीचन्द कोहली, जानू नागर, नसरीन, राबिया कुरेशी, राकेश खैरालिया, बबली राय ने सुनीता आर्यन के मामा जी की डायरियों से प्रेरित हो कर लिखा 'डायरिस्ट' किस्तों में प्रस्तुत है।

सोमवार

शाम छह बजे घर से गया, सुबह साढे चार बजे आया।

चिंतन का नतीजा जितना नफ़ीस है उतना ही बड़ा ख़तरा है।

5 रुपये चाय में लगे हैं। 18 रुपये की यह डायरी लाया हूँ। 1 रुपये की पेंसिल, 1 रुपये का पेन लिया है।

बाकी सब साधारण है।

मंगलवार

सुबह ड्युटी गया।

32.50 रुपये की दवा अपने लिये, 4 रुपये बस में आने-जाने का, 8 रुपये का संतरा। 20 रुपये फोटो।

खुद को कत्ल करने की ज़हमत नहीं उठाई तो कहानी की अगली किश्त नहीं लिखी जायेगी। मुझे अपनी हज़ार कविताओं पर गर्व है।

बाकी सब साधारण है।

बुधवार

आज घर पर ही हूँ। सारे दिन पीता-खाता रहा, नशा-सा हो गया।

चप्पल ठीक कराई।

तलाशने के लिये पैदल चलना लाज़मी है। कोशिश दायरों के बाहर की है।

बाकी सब साधारण है।

गुरुवार

148 का सामान लाया।

सपना अगर देखने वाले के खिलाफ़ हो जाये तो ? किरदार का भटकाव गहराई से सोचने पर मजबूर करता है।

अन्य समाचार सब सही है।

शुक्रवार

जैसे कि दिन मेरे लिये ही उदय हुआ हो। घर लौटा 4 : 45 पर।

180 रुपये लाइट के दिये, 10 रुपये में दूध।

सबका हो जाना क्या है ? जब शाम का ठंडक से भरा आसमान गहरा नीला रंग ले लेता है, तो अनंत की छवि देते हुये एक बेचैन रुकावट पैदा करता है।

जो सबका हो, पूरी दुनिया का हो, कुछ चाहत, कुछ अहसास कराता हो, चाहे वह शारीरिक हो या ज़हनी, वो कहीं न कहीं हम सब में एक कनेक्शन बना देता है।

आज का दिन सबसे अच्छा रहा है।

शनिवार

अंजू की स्कूल फ़ीस। शॉल कान्ती को 75 रुपयें का। 8 रुपये सिगरेट और माचिस।

अनीता का पत्र जेब में रखे-रखे मुड़ गया है। बाकी सब साधारण है।

इतवार

इतवार था, घर पर ही रहा हूँ।

32 रुपये साइकिल में लगाया है। साइकिल को ठीक किया है।

नश्वरता लाज़मी है पर सुनहरे माहौल की संरचनायें उसे खारिज कर चुकी हैं।

बाकी सब साधारण है।

गुड़गाँव में मजदूर

मधु इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 1 शास्त्रीनगर इन्डस्ट्रीयल एरिया (निकट रेलवे स्टेशन), दौलताबाद रोड़ स्थित फैक्ट्री में नये भर्ती की तनखा 3000 तथा दो-तीन वर्ष से काम कर रहों कि 3500-3600 रुपये और ऐसे 50 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। गाली और मारपीट। स्थाई मजदूर 27 हैं, तनखा 4503 रुपये।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "उद्योग विहार में फेज-1 में प्लॉट 195, 196, 205, 206 तथा फेज-2 में प्लॉट 292 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में अप्रैल माह की तनखा नहीं दिये जाने के विरोध में कैजुअल वरकरों ने कल, 20 मई की सुबह 8 बजे से काम बन्द कर रखा है।"

उषा अमोरफस मैटल्स कामगार : "486-7 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में ट्रान्सफार्मरों के हिस्से-पुर्जे बनाते 32 स्थाई मजदूरों और 100 कैजुअल वरकरों पर काम का बहुत ज्यादा बोझ, पानी-पेशाब में भी टोकते। महीने में 125-190 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान 31 रुपये प्रतिघण्टा, हर महीने 3-4 दिहाड़ियों की गड़बड़ी। दस-बीस वर्ष से स्थाई मजदूरों की तनखा मात्र 6-7000 रुपये..... राहत के लिये एक यूनियन से जुड़े। मार्च में तनखा बढाने, कैजुअलों को स्थाई करने आदि वाला माँग-पत्र कम्पनी को दिया। इस पर 28 अप्रैल को मैनेजमेन्ट ने सब कैजुअल वरकरों को निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत, फैक्ट्री गेट पर धरना। 11 मई को पुलिस आई, धमकाया, यहाँ क्या कर रहे हो, कोर्ट जाओ, भगा दिया। श्रम विभाग में 18 मई की तारीख : मैनेजमेन्ट बोली कि कैजुअल वरकर नहीं थे बल्कि ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर थे और फैक्ट्री में अब काम नहीं है। जबकि, फैक्ट्री में रोज नई भर्ती कर रहे हैं। निकाले 100 को अप्रैल की तनखा 18 मई को श्रम विभाग में दी पर मार्च तथा अप्रैल के ओवर टाइम के पैसे आज 21 मई तक नहीं दिये हैं।"

ऋचा एण्ड कम्पनी वरकर : "192 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 13 मई को साँय 4 बजे की चाय के समय एक मजदूर का मोबाइल बज रहा था। इस पर मैनेजर ने झाड़ू से मजदूर को पीटा। विरोध में 200 मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। जनरल मैनेजर को फोन किया.... आऊँगा, मैनेजर को समझाऊँगा, काम करो। एक घण्टे काम बन्द रहा। तब से हर रोज शाम को फैक्ट्री में पुलिस आ रही है।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट मजदूर : "298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है तथा उसके बाद 9-10 बजे तक रोकते हैं तब भी दो घण्टे को ही ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान सिंगल रेट से। महीने में 10-12 नाइट लगती हैं, रात 1 बजे तक रोकते हैं तब रोटी के लिये पैसे देते हैं पर दो महीने बाद। कम्पनी घाटे में चल रही है कह कर तनखा देते समय 5 प्रतिशत काट लेते हैं। गाली देते हैं.... नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म भरने के लिये 3-4 महीने चक्कर कटवाते हैं।"

कैलाश रिबन श्रमिक : "403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और शनिवार को रात 8 बजे काम आरम्भ करने वाले बीस घण्टे बाद, रविवार को साँय 4 बजे जा कर छूटते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3200-3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

एन एस के कामगार : "214 उद्योग विहार फेज-1 स्थित बाइंग हाउस में 150 लोग काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। महीने में 60-70 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

ऋचा वरकर : "232 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 17 मई को मैनेजर ने सिलाई कारीगर के थप्पड़ मारा तो कारीगर ने उसे कटर मारा। काम बन्द कर सब कारीगर इक्ट्ठे हो गये तो मैनेजर ने अपने को केबिन में बन्द कर लिया। जनरल मैनेजर आया और मैनेजर ने सब मजदूरों के सामने माफी माँगी।"

मोडलामा सुपरवाइजर : "417 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ को तनखा ए टी एम से मिलती है। जनवरी में 10,000 रुपये तनखा में प्रोडक्शन सुपरवाजर लगाया। ए टी एम अकाउन्ट एक्टीवेट नहीं किया तो तंग हो कर 15 अप्रैल को नौकरी छोड़ी। इस्तीफा स्वीकार नहीं कर रहे, कहते हैं कि यहाँ काम करो तब पैसे देंगे।"

प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग मजदूर : "185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी, टाटा, महिन्द्रा, फोर्ड, पंजाब ट्रैक्टर, नैनों** के स्टीयरिंग व्हील, हॉर्न, डम्फर, रेडियेटर फैन बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3500 रुपये और ओवर टाइम मात्र 6 रुपये प्रतिघण्टा। तनखा हर महीने देरी से, अप्रैल की 16 मई को दी। पीने का पानी खराब।"

आई एम टी मानेसर

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर: "प्लॉट 1 व 2 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में चार वर्ष से होण्डा का एक मैनेजर **राधा स्वामी** पंथ से जुड़ी दयालबाग एजुकेशनल इन्सटीट्युट की 76 शाखाओं से युवा मजदूरों को ला कर यहाँ ठेकेदारों के जरिये फैक्ट्री में लगाता है। जिलों में राधा स्वामी सत्संग स्थलों की बगल में स्थित संस्थानों में वायरमैन तथा मोटर मैकेनिक फोरव्हीलर का एक वर्ष का प्रशिक्षण देकर उन्हें **होण्डा, महिन्द्रा, टाटा** आदि फैक्ट्रियों को सप्लाई किया जाता है। इस्तेमाल करो और फेंको की तर्ज पर होण्डा कम्पनी तीन-चार वर्ष काम करवा कर इन मजदूरों को निकाल देती है।"

रमैया फैशन श्रमिक : "प्लॉट 51 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से साँय 6 की शिफ्ट है पर महीने में 25 रोज रात 1 बजे तक रोकते हैं। रविवार को भी काम। महीने में 200 घण्टे से ऊपर ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ स्टाफ की हैं, 300 मजदूरों में किसी की नहीं हैं। अप्रैल की तनखा मजदूरों को 23 मई को जा कर दी, स्टाफ को तब भी नहीं।"

सुपर फाइन कामगार : "प्लॉट 118 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 500 मजदूर बुश बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

अहरीन लैदर वरकर : "प्लॉट 392 सैक्टर-8 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर चमड़े के बटुये और थैले बनाते थे, अब बचे 10 लोग बटुये ही बनाते हैं। फरवरी तथा मार्च की तनखायें 14 अप्रैल को जा कर दी तब कई मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी। जिन मजदूरों ने जनवरी में फैक्ट्री छोड़ी उनके पैसे आज, 24 मई तक नहीं दिये हैं – ऐसे 50 को तारीख देते रहते हैं। जो 10 काम कर रहे हैं उन्हें अप्रैल की तनखा और फरवरी-मार्च के ओवर टाइम के पैसे आज 24 मई तक नहीं दिये हैं।"

ओमैक्स ऑटो मजदूर : "प्लॉट 6 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 10½-10½ घण्टे की दो शिफ्टों में 200 स्थाई मजदूर और छह ठेकेदारों के जरिये रखे 1200-1300 वरकर **होण्डा, हीरो होण्डा, सुजुकी, मिण्डा** के लिये मोटरसाइकिलों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। महीने में 60-84 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 16-20 रुपये प्रतिघण्टा और खासकर के 800 नये मजदूरों के 10-15 घण्टे गड़बड़ कर हर महीने खा भी जाते हैं। हैल्परों की तनखा 4214 रुपये ही। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं, फण्ड के पैसे कुछ मजदूरों को मिल जाते हैं, कुछ को नहीं मिलते। ज्यादा काम वैल्डिंग का है, प्रदूषण बहुत अधिक है।"

चुन्नु फैशन श्रमिक : "प्लॉट 23 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में अब 10-12 मजदूर हैं, मार्च में 300 थे। आर्डर मिलने पर भर्ती कर लेते हैं और काम होते ही निकाल देते हैं। जनवरी के पैसे आज 24 मई तक नहीं दिये हैं। गाली देते हैं। पुलिस बुला लेते हैं। एक बड़े नेता को रिश्तेदार बताते हैं।"

क्यू एच टालब्रोस कामगार : "प्लॉट 51 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर, 50 कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर **मारुति सुजुकी, टाटा, एस्कोर्ट्स, सोना स्टीयरिंग** तथा निर्यात के लिये स्टीयरिंग रोड बनाते हैं। स्थाई मजदूरों में 50 की 8 घण्टे की शिफ्ट है और बाकी सब की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और कैजुअलों व ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। आरम्भ में 1500-1500 रुपये दे कर और फिर हर महीने 100-100 रुपये देते स्थाई मजदूर एक वर्ष से एक यूनियन से जुड़े हैं। यूनियन के लिये कई अन्य मजदूरों ने भी शुरु में 200-200 रुपये दिये थे। मई-आरम्भ में भड़काने

(बाकी पेज दो पर)

दिल्ली में मजदूर

1 फरवरी 2011 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल श्रमिक 6084 रुपये (8 घण्टे के 234 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 6734 रुपय (8 घण्टे के 259 रुपये); कुशल श्रमिक 7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये) । पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

बिन्द्रा एक्सपोर्ट मजदूर : "बी-89 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दिन की 11 घण्टे और रात की 13 घण्टे की शिफ्टों में **सिफली, ताजीमा** आदि का कढाई का काम होता है। महीने में 13 दिन 11 घण्टे और 13 रोज 13 घण्टे पर (कुल 26 दिन पर) हैल्परों को 3000 रुपये और ऑपरेटरों को 6300 रुपये देते हैं। रविवार के काम को ओवर टाइम कहते हैं, भुगतान सिंगल रेट से और रोटी के लिये 25 रुपये देते हैं। अप्रैल की तनखा आज 15 मई तक नहीं दी है। फैक्ट्री में काम करते 70 मजदूरों में 2-3 की ई.एस.आई. है, पी.एफ. किसी की नहीं है। पीने का पानी खारा। शौचालय बहुत गन्दा।"

डीटेल्स श्रमिक : "डी-30 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से सिलाई विभाग में रात 8¼, फिनिशिंग विभाग में रात 9¼ की ड्युटी है और हाथ से कढाई के 50 अड्डों तथा एक कम्प्युट्रीकृत कढाई मशीन पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर धागे काटने वाली 25 महिला मजदूरों की तनखा 4200-5000 रुपये ही है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 600 मजदूरों में 300 की ही हैं। यहाँ **नैक्स्ट** का माल बनता है। कैन्टीन है पर छोटी है, अधिकतर मजदूरों को मशीनों की बगल में भोजन करना पड़ता है। सुबह 9½ से साँय 6 के दौरान चाय के लिये कोई ब्रेक नहीं देते। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले 300 को ही पे-स्लिप देते हैं और फरवरी में नया ग्रेड लागू हुआ है तब से पे-स्लिप में कई कुशल को अर्ध-कुशल तथा अर्ध-कुशल को अकुशल श्रमिक बना कर वेतन देने लगे हैं।"

क्रियेटिव फैशन कामगार : "ई-49/7 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में फैशन शो के कपड़े तथा सैम्पल तैयार करते मजदूरों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है – रविवार को साँय 4 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 सिलाई कारीगरों में तो मात्र एक की ही हैं। कम्पनी का उत्पादन कार्य ओखला फेज-2 में सी-55 तथा डी एस आई डी सी शेड 102 में होता है। तनखा 15 दिन में देते थे पर मार्च माह से यह महीने पर कर दी है जिससे दिक्कतें बढ गई हैं क्योंकि छोटी कमाई है, जल्दी पैसे मिल जाने से खर्च चल जाता था।"

कनवरटेक वरकर : "एफ-90/6 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3700 और कारीगरों की 5000-6000 रुपये। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट में प्रिन्टिंग प्रेस की स्टील ब्लेड बनती हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

नित्या (स्कोर्पियो एपरेल्स) मजदूर : "सी-30 ओखला फेज-1 स्थित चार मंजिला फैक्ट्री में 600 महिला मजदूर सिलाई, धागे काटने, दाग हटाने, प्रेस आदि के कार्य करती हैं। लाइन मास्टर, आल्टरमैन, सफाईकर्मी ही पुरुष हैं। कटिंग कम्पनी की फरीदाबाद फैक्ट्री से आती है। जब नित्या का माल बनता है तब रोज ओवर टाइम और रविवार को सुबह 9 से साँय 6 तक काम। बायर का माल बनता है तब ओवर टाइम नहीं। मार्च में पूरे महीने ओवर टाइम। इधर काम बहुत कम है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ 15-20 वर्ष से सिलाई कर [illegible] 100 की तनखा 7410 रुपये और बाकी 300 टेलरों की 6700 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 7410 रुपये वालियों की ही हैं, 6700 वालियों की नहीं हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। छूटते समय फैक्ट्री से निकलने में आधा घण्टा लग जाता है..... सुबह पहुँचने में 9 बज कर 6 मिनट हो गई तो आधे दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं।"

बुटीक ग्रोअर-श्याम फैशन श्रमिक : "डी-80 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और रात 1 बजे तक, अगली सुबह 4 तक रोक लेते हैं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदार नहीं हैं, सब मजदूर तनखा पर रखे हैं, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं।"

किरायेदार : "तेखण्ड में पानी के लिये मोटर चलानी पड़ती है। एक दो मंजिला मकान के 22 कमरों में किरायेदार रहते हैं। इधर 6 महीनों से मकान मालिक एक दिन छोड़ कर पानी देने लगा है – एक रोज ऊपरवालों को, दूसरे दिन नीचेवालों को। आज रविवार है, कपड़े धोने को पानी नहीं है..... ज्यादा कैन रखने पर भी एतराज। इस प्रकार मकान मालिक के एक-दो युनिट बिजली बचती होगी, दस रुपये बचे..... किरायेदारों को होती परेशानी से कोई मतलब नहीं। वर्ष-भर पहले मोटर चोरी हुई तब मकान मालिक ने हर कमरे से 150 रुपये लिये। ... रहना है तो रहो, कमरे किराये पर लेने वालों की लाइन लगी है।"■

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

आप–हम क्या... (पेज एक का शेष)

साक्षात्कार के लिये बुलाया, बहुत लोग पहुँचे थे, अधिकारी बोले आज नहीं होगा, पत्र द्वारा सूचित कर दिया जायेगा..... पत्थरबाजी..... ताला लगा कर चले गये. .... सूचना पत्र फिर आया ही नहीं। आई टी आई के बाद प्रतापगढ रोजगार कार्यालय में नाम दर्ज करवाया। कहीं नहीं भेजा। 2003 में तथा फिर 2006 में नवीनीकरण करवाया। कहीं नहीं भेजा। 2006 में बोले कि आगे नवीनीकरण करवाने मत आना। मुझे बहुत गुस्सा आया था। काँग्रेस, भाजपा, सपा, बसपा की सरकारें देख ली हैं।

2½ बजे ठेकेदार चाय देता है। पैसे कम हैं पर यहाँ विशेष झिक-झिक नहीं है। जान-पहचान के कई लोग यहाँ काम करते हैं.....

2009 में प्रधान ने खुद ही मनरेगा के तहत जॉब कार्ड बनवा दिया। 2010 में बरसात में प्रधान बोला कि 25 दिन काम करने के तुम्हारे पैसे आ गये हैं, खाता खुलवा कर पैसे ले लो। मैंने तो काम ही नहीं किया है..... समझ लेंगे। ऐसे बहुत लोग मिले जिन्होंने काम तो नहीं किया था पर उनके नाम से पैसे निकल जाते थे। प्रधान ने बैंक मैनेजर को अपने घर बुला कर बैंक खाते खुलवाये। पैसे निकालने होते तब प्रधान कहता कि बैंक जाओ, पासबुक ठेकेदार वहाँ ले गया है। मैं बैंक गया, 2500 रुपये निकाले, ठेकेदार ने उन में से 1700 रुपये ले लिये...... प्रधान अनपढ़ है और राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत है।

साँय 5 बजे छुट्टी कोई नहीं करता। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से हैं फिर भी रोज 12 घण्टे काम किये बिना गुजारा नहीं। कुछ मजदूरों का महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम......

दूसरा विवाह 1997 में। बच्चे। पिताजी को कम्पनी से हिसाब नहीं मिला। गाँव में अब पैकेट-बन्द सामान बेचते हैं। बैल बेच दिये हैं और अब 1½ बीघा जमीन ट्रैक्टर से जुतवानी पड़ती है। स्कूल से महीने के 800 रुपये। पत्नी आशा का काम करती है जिसमें तनखा नहीं, मानदेय भी नहीं, पीस रेट है: प्रसव पर 600 रुपये, टीकाकरण पर 50 रुपये, नसबन्दी पर 150 रुपये, पल्स पोलियो में 75 रुपये दिन के, महीने में बैठक करने के 200 रुपये। खर्चा चलाना बहुत मुश्किल। डॉ. अम्बेडकर स्वयं सहायता समूह बनाने का प्रयास..... जगह नहीं है, बकरी रखेंगे कहाँ? भैंस को खिलायेंगे क्या? चारा नहीं है। मुर्गी से बहुत गन्द फैलती है। सिलाई ? जानते नहीं। सीखलो..... प्रयास विफल। अप्रेन्टिस के बारे में फिर सोचा ताकि सी टी आई कर आई टी आई में मास्टर लग सकूँ। फरीदाबाद पहुँचा व्हर्लपूल में रेफ्रिजिरेशन एण्ड एयरकंडिशनिंग में अप्रेन्टिस करने..... बोले दूसरे प्रान्त वाले को नहीं रखेंगे। तब व्हर्लपूल में कैजुअल वरकर लगा। केबिनेट लाइन पर 3 स्थाई मजदूर, 6 कैजुअल वरकर और ठेकेदार के जरिये रखे 2 मजदूर – तनखायें 20,000 रुपये, 4200 रुपये, 3500-4000 रुपये। खेती में ज्यादा काम के कारण अगस्त 2010 में नौकरी छोड़ कर गाँव गया।

रात 8 अथवा 9 बजे छूट कर रास्ते में सब्जी लेते हुये झुग्गी पहुँचता हूँ। साथी और मुझ में जो पहले पहुँचता है वह रात का भोजन बनाता है। रात को दाल, चावल, रोटी बनाते हैं – दो घण्टे लगते हैं। सोने में 11-12 बज जाते हैं। नींद नहीं आती..... शोरगुल बिलकुल पसन्द नहीं है, बगल से गुजरती ट्रेनें बहुत डिस्टर्ब करती हैं। नींद पूरी नहीं होती। दिमाग भारी-सा रहता है। (जारी)■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011